बिक्रम महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

17-08-2020

दिनांक -

स्नातक द्वितीय खण्ड
तृतीय पत्र (हिन्दी प्रतिष्ठा)

रामनारायण प्रसाद
(अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग.

'मेरे नाविक' का भावार्थ

'मेरे नाविक' महाकवि जयशंकर प्रसाद की प्रतिनिधि कविताओं में एक है। कवि सांसारिक गतिविधियों से ऊब कर कहीं एकांत में चला जाना चाहता है। यह कवि की प्रकृतिपरक रहस्यवादी रचना है।

इस कविता के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि इस संसार में छल और स्वार्थ का बोलबाला है। उन्हें जरा भी इस संसार में रहना गवारा नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानों वह इस स्वार्थमय संसार से ऊब गया है और मन की शांति प्राप्त करने के लिए किसी अन्य लोक में जाने के लिए लालायित है। यह कविता वस्तुतः कवि की कटु-अनुभूतियों की सच्ची गाथा है। इसलिए कवि कहता है कि "हे नाविक, मुझे भुलावा देकर तू इस संसार से किसी ऐसे अन्य लोक में ले चल जहाँ चिर शांति की प्राप्ति हो सके और किसी भी प्रकार की चिन्ताएँ आदि न हों।"

कवि कहता है "हे नाविक तू मुझे भुलावा देकर ऐसे निर्जन प्रदेश में ले चल जहाँ पूर्णतः एकांत हो और समुद्र से उठनेवाली उत्ताल तरंगें आकाश से सच्चे प्रेम की कथा कहती हो।" कवि ऐसी महायात्रा पर जाना चाहता है जो कि अत्यन्त दुष्कर और संघर्षपूर्ण हो। यहाँ कवि की दृढ़ धारणा है कि लौकिक स्तर पर दिए जाने वाले प्रेम में अविश्वास और धोखा हो सकता है किन्तु प्रकृति के पदार्थों में जो प्रेम होता है, वह शाश्वत और चिरस्थायी होता है। कवि कहता है कि "हे नाविक तू मुझे ऐसे लोक में ले चल जहाँ प्रकृति भी मेरे

दुखों से संत्रस्त हो सके और जहाँ संध्या रूपी कोमल काया वाली सुन्दरी अपने नील नयनों से तारों की पंक्तियाँ ढुलकाती हो।" कवि कहना चाहता है कि प्रकृति भी मेरे दुखों में भागीदारी हो।

यहाँ कवि ने प्रकृति का मानवीकरण भी किया है। कि कवि इस संसार से ऊब कर भावनाओं का एक नया संसार बसाना चाहता है।

"श्रम विश्राम मिलिज वेला से -
जहाँ सृजन करते मेला से -
अमर जागरण उषा नयन से -
बिखराती हो ज्योति घनी रे!"

कवि वहाँ जाना चाहता है जहाँ सृजन का मेला लगता हो। सृजन से ही संतोष की भावना जागृत होती है। इसलिए कवि इस संसार को छोड़ कर अन्यत्र जाना चाहता है। इस भाव-साम्य की दृष्टि से दिनकर की कुछ पंक्तियाँ भी द्रष्टव्य है -

"मैं न रुकूँगा इस भूतल पर
जीवन यौवन प्रेम गँवा कर
वायु उड़ा कर ले चल मुझको
जहाँ कहीं इस जग से बाहर।"

रामनारायण प्रजापत.